निवृत्ति के लिए किये जाते हैं। परन्तु कृष्णभावनाभावित कर्म सब प्रकार के शुभ-अशुभ फल से मुक्त हैं। कृष्णभावनाभावित भक्त में लेशमात्र भी फलासक्ति नहीं रहती, वह तो बस श्रीकृष्ण की प्रीति के लिए कर्म करता है। अतएव सब प्रकार के कर्म करते रहने पर भी वह सर्वथा अनासक्त है।

10/3

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि।।२०।।

कर्मणा=कर्म द्वारा; **एव**=ही; **हि**=निस्सन्देह; **संसिद्धिम्**=परम कृतार्थता को; **आस्थिताः**=प्राप्त हुए हैं; **जनकादयः**=जनक आदि राजा; **लोकसंग्रहम्**=लोकशिक्षा को; **एव**=ही, **अपि**=भी; **संपश्यन्**=विचार कर; **कर्तुम्**=करने के; **अर्हसि**=योग्य है।

अनुवाद

जनक आदि राजा भी कर्म द्वारा ही संसिद्धि को प्राप्त हुए हैं। इसलिए लोकसंग्रह के उद्देश्य से भी तू स्वधर्म रूप कर्म को करने के ही योग्य है।।२०।।

तात्पर्य

जनक आदि राजर्षि आत्मज्ञानी थे। इसलिए उनके लिए वैदिक कर्म का आचरण आवश्यक कर्तव्य नहीं था। तथापि लोकशिक्षा के लिए उन्होंने सब नियत कर्मों का भलीभाँति आचरण किया। जनक श्रीसीताजी के पिता और भगवान् श्रीराम के श्वसुर थे। महाभागवत होने से उनकी स्थिति लोकोत्तर थी, फिर भी मिथिला के अधिपति के रूप में वे अपनी प्रजा को धर्मयुद्ध की शिक्षा देते थे। वे और उनके प्रजाजन जनसाधारण को इस बात की शिक्षा प्रदान करने के लिए युद्ध करते थे कि सद्परामर्श के विफल हो जाने पर कभी-कभी हिंसा भी आवश्यक हो जाती है। कुरुक्षेत्र-युद्ध से पूर्व भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं युद्ध के निवारणार्थ अशेष उद्योग किया, किन्तु विपक्ष युद्ध के लिए सब प्रकार से कृतसंकल्प था। अतः ऐसे धर्ममय उद्देश्य के लिए युद्ध आवश्यक है। यद्यपि कृष्णभावनाभावित पुरुष के लिए संसार लेशमात्र भी रुचिकर नहीं रहता, तब भी जनता को जीवन-यापन तथा कर्म करने की शिक्षा देने के लिए वह कर्म करता है। जैसा अगले श्लोक में कहा गया है, कृष्णभावना का मर्मज्ञ पुरुष अपने कार्य-कलाप के द्वारा ऐसा आदर्श स्थापित करता है जिसका अन्य मनुष्य अनुसरण कर सकें।

10/3

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।२१।।

यत्=जो; **यत्**=जो भी; **आचरति**=आचरण करता है; **श्रेष्ठः**=लोकनायक; **तत्**=वह; **तत्**=वह; **एव**=ही; **इतरः**=साधारण; **जनः**=मनुष्य; **सः**=वह; **यत्**=जो; **प्रमाणम्**=प्रमाण; **कुरुते**=करता है; **लोकः**=सम्पूर्ण विश्व; **तत्**=उसका; **अनुवर्तते**=अनुसरण करता है।